Vol 7 Issue 1 Oct. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

नाथ पंथ और गुरू गोरखनाथ का ऐतिहासिक –साहित्यिक अवदान

डॉ. गोपीराम शर्मा[1] , श्री आत्मा राम[2]
[1]सहायक प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.
[2]सहायक प्रोफेसर , इतिहास विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

शोध सारांश :

उद्देश्य (Objectives) –

इस शोध आलेख का उद्देश्य नाथ पंथ और गुरू गोरखनाथ की ऐतिहासिकता का विवेचन करते हुए नाथ पंथ के साहित्य विशेषकर गुरू गोरखनाथ के साहित्य का अनुशीलन करना है। गुरू गोरखनाथ का साहित्य न केवल 1000 वर्ष पहले बल्कि आज के समय में भी अपनी उपादेयता रखता है। आज के समय में समाज में भौतिकता, आडम्बर, पाखंड, हिंसा जैसे तत्त्व बढ़े हैं। पोंगापंथी बाबाओं एवं ढोंगी लोगों का प्रभाव इन दिनों बढ़ा है। गोरखनाथ का साहित्य साधुओं और गृहस्थों दोनों को मार्ग दिखाने वाला है। इस शोध आलेख से गोरखनाथ की युग द्रष्टा छवि सामने लाकर उनके उपदेशों से परिचित होने का उपक्रम है।

शोध प्रविधि (Methodology) –

इस शोध में द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकों एवं साहित्य से जुड़ी सामग्री को आधार बनाया गया है। ऐतिहासिक एवं साहित्यिक ग्रंथों से सामग्री को लेकर अपने मत का प्रतिपादन किया गया है। लिखित सामग्री को आधार बनाकर सापेक्षवादी ज्ञान मीमांसा पद्धति का प्रयोग असहभागी अवलोकन के तहत कर शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

मुख्य शब्द (Keywords) –

नाथ पंथ, गुरू गोरखनाथ, साहित्य, आडम्बर, पाखंड, शंकराचार्य, युगद्रष्टा, अवधूत, ब्रह्म, ब्राह्मण धर्म

शोध सार (Abstract) –

भारतीय धार्मिक इतिहास में 200 ई. से 1200 ई. का काल में पुराण–आगम एवं तंत्रों का विकास हुआ। इस समय उद्भव हुए विभिन्न सम्प्रदायों में नाथ सम्प्रदाय महत्त्वपूर्ण बनकर उभरा। नाथ सम्प्रदाय की जानकारी ऋग्वेदकाल से ही मिलती है पर इसका संगठन करने का श्रेय गोरखनाथ को ही दिया जाता है। नाथों के विभिन्न नाम भारतीय धार्मिक साहित्य में मिलते हैं, इनमें गोरखनाथ ही ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। भारतीय इतिहास में गोरखनाथ का काल का स्पष्ट निर्धारण नहीं हो सकता है। 9वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक के समय में गोरखनाथ के होने के सूत्र प्राप्त होते हैं। योगी लम्बा जीवन जीते हैं पर यह कालावधि बहुत ज्यादा है। 13वीं सदी का प्रारम्भ इनका समय स्वीकार किया जा सकता है।

गोरखनाथ के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के साथ उनके साहित्यिक, संगठनकर्ता और युगद्रष्टा रूपों का विवेचन भी आवश्यक है। इनके विविध रूपों एवं सिद्धान्तों की जानकारी इनके साहित्य में ही मिलती है। इनका साहित्य विस्तृत एवं विविध भाषाओं में रचित है। हिन्दी में इनकी 40 रचनाओं का संकलन 'गोरखबाणी' नाम से हुआ है। इनके साहित्य में संन्यासी एवं गृहस्थों के लिए प्रबोधन है। दर्शन, आत्मा–परमात्मा एवं हठयोग के सिद्धान्तों के बीच समाज को सदाचार का मार्ग दिखाया गया है। तत्कालीन समाज के मत–मतान्तरों, आडम्बरों, पाखंड एवं अनाचार का इस साहित्य में यथार्थवादी चित्रण हुआ है। सभी धर्मों के कर्मकाण्ड और बाह्याचारों पर गुरू गोरखनाथ ने प्रहार किया। समाज को पुस्तकों से ज्ञान न लेकर अपनी आत्मचेतना से सजग होने का संदेश दिया। गुरू की महत्ता, जीव दया, अहिंसा, सदाचार, शारीरिक–मानसिक शुद्धि, योग, धैर्य, वीर्य संयमन, प्राण साधना, नाड़ी साधना, सत्य, संतोष एवं इन्द्रिय निग्रह जैसे तत्त्वों को इस साहित्य में प्रतिपादित किया है। गुरू गोरखनाथ ने समाज को ऊपर उठाने और मानव कल्याण के मार्ग को प्रशस्त कर युगद्रष्टा की भूमिका निभाई है। उन्होंने धर्म के विकृत रूपों का विरोध कर ब्राह्मण की प्रतिष्ठा बढ़ाई और धर्म पुनर्स्थापना का महनीय कार्य किया।

निष्कर्ष –

गोरखनाथ और उनका नाथ पंथ इतिहास में अधिक स्थान नहीं पा सका। गोरखनाथ के ऐतिहासिक महत्त्व को पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। उनके काल का सही निर्धारण करने के साथ उनके साहित्यिक महत्त्व से परिचित होना आवश्यक है। गोरखनाथ एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व होने के साथ महान संगठनकर्त्ता, धर्म सुधारक, दार्शनिक एवं युगद्रष्टा थे। उन्होंने लोक भाषा एवं आमजन का उद्धार कर लोकनायक की छवि बनाई। समाज में आज भी धार्मिक वितण्डावाद, पाखंड, आडम्बर बढ़ रहे हैं। ऐसे में गोरखनाथ के सिद्धान्तों की आवश्यकता है। हम सदाचार का पालन कर, अपनी आत्म चेतना जगाकर, तन–मन की शुद्धता को अपनाकर, सत्य, संतोष, संयम पर बल देकर अपने नैतिक चरित्र को सबल कर सकते हैं। यदि व्यक्ति चारित्रिक रूप से सम्पन्न होता है तो वह राष्ट्र भी सुदृढ़ होता है।

प्रस्तावना :

भारत में प्राचीन काल में राजनैतिक इतिहास की जगह धार्मिक इतिहास को अधिक महत्त्व दिया जाता रहा। इस धार्मिक इतिहास में लगभग 200 ई. से 1200 ई. तक लम्बा समय पौराणिक–आगमिक–तांत्रिक युग के नाम से जाना गया। इस दीर्घावधि में भारत में पुराणों, आगमों एवं तंत्रों की रचना प्रक्रियापूर्ण हुई। इस काल में यहाँ विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में संघर्ष और समन्वय चलता रहा। इन सम्प्रदायों में पाशुपत, भागवत, पाषण्ड, अर्हत, जैन, बौद्ध, भैरव, भिक्षु, शाक्य, सांख्यक, भोजक, चार्वाक, त्रिशूलधारी, सौगत, डामर, कापालिक, लांगल, लिंगधारी, नास्तिक, निर्ग्रन्थ पांचरात्र, शैव, वैष्णव आदि प्रमुखता से चल रहे थे।

इसी युग में योगमार्गियों ने शैव मत को अपनाकर अपनी नयी पहचान स्थापित की। वैसे तो योगियों की परम्परा वैदिक युग से ही अवस्थित हो गयी थी पर इस काल में योगियों ने प्राणायाम या योगाभ्यास को साधना में अपनाकर अपना दार्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उनके दर्शन के अनुसार शरीर के अंगों पर प्राणसाधना द्वारा नियंत्रण कर प्राकृतिक शक्तियों को भी वश में लाया जा सकता था। इस तथ्य का जिक्र करते हुए इतिहासकार ब्रिग्स लिखते हैं– ''उस काल के व्रात्य लोगों के विषय में कहा गया है कि उनमें से कई एक रूद्र की उपासना करते थे तथा प्राणायाम को भी महत्त्व देते थे।''[1] इन योगियों के सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय के नाम से जाना गया। आदिनाथ शिव द्वारा अवतरित इस सम्प्रदाय में प्राण साधना के साथ वाक् या शब्द को महत्त्व दिया। हालांकि व्यक्ति के रूप में मत्स्येन्द्रनाथ इस परम्परा के प्रथम आचार्य हैं। ''नेपाल के एक शिलालेख से वर्णित है कि श्रेष्ठ योगी लोग उन्हें मत्स्येन्द्रनाथ कहते हैं। शक्ति के उपासक उन्हें शक्तिनाथ कहते हैं। बौद्ध लोग उन्हें लोकेश्वर के नाम से सम्बोधित करते हैं जो स्वरूपतः ब्रह्मा हैं, उस पुरूष की जय हो।''[2] गुरू गोरखनाथ इस सम्प्रदाय के प्रमुख योगी थे, जिन्होंने इस सम्प्रदाय को संगठित और सुव्यवस्थित करने का कार्य किया। इन्होंने पेशावर से लेकर आसाम तक एवं कश्मीर व नेपाल से लेकर महाराष्ट्र तक की यात्राएँ कर इस सम्प्रदाय के केन्द्र स्थापित किए। इनके प्रयत्नों से बहुत से शिष्य जुड़े और अनेक शाखाएँ स्थापित हुई। इनकी 12 शाखाओं सहित नवनाथ प्रसिद्ध हैं, जिनमें आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, पर्पटनाथ, गाहिणीनाथ, ज्वालेन्द्र नाथ, चौरंगीनाथ, गोपीचंद नाथ, भर्तृहरिनाथ आदि प्रमुख हुए।

नाथ सम्प्रदाय को सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग, योग मार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत मत, अवधूत सम्प्रदाय आदि नामों से जाना गया। नाथ शब्द न + अथ से बता है, जिसका अर्थ है जिसका आदि और अन्त ज्ञात नहीं है। ''इस शब्द (नाथ) का व्यवहार सम्प्रदाय में मुख्यतः दो अर्थों में किया गया है। विश्व के परम कारण, जिसे ब्रह्म, शिव, परमपद, अनाम, अव्यक्त आदि शब्दों से सूचित किया जाता है, वही नाथ है। दूसरा, सम्प्रदाय के आचार्य पुरूष या गुरू नाथ कहलाते हैं। इस अर्थ में नाथ गुरू का वाचक है। वस्तुतः इस सम्प्रदाय में गुरू और शिव में अन्तर नहीं माना जाता है।''[3]

ऐतिहासिकता की दृष्टि से नाथों के बारे में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। नाथ पंथ को ऋग्वेदकाल से जोड़कर देखा जाता है, जैन धर्म के तीर्थंकरों के नामों से भी नाथ शब्द जुड़ता है। इसी प्रकार वज्रयानी सिद्धों से नाथों का सम्बन्ध है। गोरखनाथ से पूर्व के नाथों के बारे में इतिहास में कुछ प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। केवल किंवदंतियों में जानकारी है। ''इस सम्प्रदाय के ऐसे गुरू, ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक रूप से जिनकी सत्ता को स्वीकार किया जा सकता है, गुरू गोरखनाथ थे। पर उनके काल के विषय में भी ऐतिहासिकों में बहुत मतभेद है। कोई उन्हें आठवीं सदी का मानता है तो कोई बारहवीं सदी का। संभवतः उनके काल को आठवीं–नवीं सदी में रखा जा सकता है।''[4] राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय 845 ई., हजारी प्रसाद द्विवेदी नौवीं शताब्दी, डॉ. पीताम्बर बड़थ्थवाल 11वीं शताब्दी, डॉ. रामकुमार वर्मा एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 13वीं शताब्दी बताते हैं। ''नवीन खोजों के अनुसार यही धारणा प्रबल हुई है कि गोरखनाथ ने ईसा की तेरहवीं शती के आरम्भ में अपना साहित्य लिखा।''[5] नेपाल के शैव बौद्ध परम्परा के नरेन्द्र देव और शंकराचार्य से भेंट गुरू गोरखनाथ समय 8वीं–9वीं शताब्दी, गूंगा की कहानी, ज्ञानेश्वर की परम्परा व तेरहवीं शताब्दी में गोरखपुर का मठ ढहा देना इन्हें 1200 ई. से पहले का, कबीर नानक आदि के साथ संवाद इन्हें 14वीं सदी के प्रारम्भ में होना सिद्ध करते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी इनके जन्म स्थान और जाति के बारे में लिखते हैं– ''योगसम्प्रदायविस्कृति' में उन्हें गोदावरी तीर के किसी चन्द्रगीरी में उत्पन्न बताया गया है। मेरा अनुभव है कि गोरखनाथ निश्चित रूप से ब्राह्मण जाति में उत्पन्न हुए थे।''[6] गोरखनाथ के बचपन का नमा अनंगवज्र था और नया नामकरण गुरू मत्स्येन्द्र नाथ ने किया। ''सुप्रसिद्ध तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने लिखा है कि गोरखनाथ पहले बौद्ध थे। उस समय उनका नाम अनंगवज्र था।''[7] नाथपंथ में गोरखनाथ से पूर्व जिन नाथ नामधारी योगियों का जिक्र मिलता है उनमें से किसी को 'गुरू' नहीं कहा गया है। गुरू गोरखनाथ को ही इस मत का संगठनकर्त्ता और मार्गदर्शन पद्धति के प्रवर्तन का श्रेय दिया जा सकता है। ''गुरू गोरखनाथ का कार्यक्षेत्र उत्तरी भारत, असम, नेपाल आदि तक विस्तृत था। उत्तरी भारत के प्रायः सभी प्रदेशों में उनके धर्म का प्रचार हुआ और धीरे–धीरे अफगानिस्तान, बलोचिस्तान, सिलोन तथा पेनांग आदि अन्य प्रदेशों में भी उनके मन्तव्यों का प्रचार हो गया।'' [8]

गोरखनाथ एक संगठनकर्त्ता, युगद्रष्टा होने के साथ एक दार्शनिक, विचारक और साहित्यकार भी थे। उनके सिद्धान्त उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। गोरखनाथ बहुभाषाविद् थे। योग, चिकित्सा एवं दर्शन आदि विषयों पर उनके 28 संस्कृत ग्रंथ, 40 हिन्दी ग्रंथों सहित बंगाली, मराठी, गुजराती, राजस्थानी एवं पंजाबी में भी उनकी रचनाएं मिलती हैं। इनके ग्रंथों में सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, हठयोग, हठ संहिता, गोरक्ष चिकित्सा, महार्थ मंजरी, प्राण सांकली, शिष्या दर्शन, नरवै बोध, आत्म बोध, ग्यान चौंतीसा, पंचमात्रा, सप्तवार, रोमावली, गोरख गणेश गुष्टि, महादेव गोरख गुष्टि, सिस्ट पुराण आदि प्रमुख हैं। 1942 ई. में डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल ने गोरखनाथ की 40 कृतियों का एक संग्रह 'गोरख वाणी' के नाम से सम्पादित किया है।

गुरू गोरखनाथ का साहित्य अपने समय व समाज का चित्रण करता है। तत्कालीन समाज के मत–मतान्तरों, आडम्बरों, पाखंड व अनाचारों का यथार्थ वर्णन उनके साहित्य में मिलता है। गोरखनाथ ने सभी धर्मों के कर्मकांडों पर प्रहार किया। वे नाथ सिद्धों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

''नौ नाथ चौरासी सिधा आसणधारी हूवा।
जोग को तिन पार न पायो, बन षंडा भ्रमि भ्रमि मूवा।''[9]

गुरू गोरखनाथ ने मुस्लिम धर्म के बाह्याचारों एवं मुल्लाओं के कर्मकांडों पर प्रहार किया –

''महंमद महंमद न करि काजी, महमंद का विषय विचारं।
महंमद हाथि करद जे होती लोहे घड़ी न सारं।।''[10]

जैन, ब्राह्मण, शैव, वैष्णव सबको गुरू गोरखनाथ ने धर्म का मर्म समझाया –

''चौदसिया नै पूनमिया, जैन व्रतधारी हूवा।
अरहंत को तिन पार न पायौ, केस लोचि लोचि मूवा।।''[11]

वे कहते हैं कि सभी मतावलम्बी अपने–अपने धर्मों की पुस्तकें पढ़ते रहे, तीर्थ यात्रा पर भटकते रहे। परन्तु उन्हें मुक्ति का रहस्य प्राप्त न हो सका –

''काजी मूलां कुरांण लगाया, ब्रह्म लगाया वेद।
कापड़ी संन्यासी तीरथ भरमाया, न पाया निरबांण का भेद।।''[12]

गोरखनाथ ने साधु संन्यासियों और अवधूतों हेतु आचार संहिता का निर्माण किया। आडम्बरों से सबको दूर रहने का संदेश दिया। उन्होंने पाखंडियों के लक्षणों को सामने रखा –

''सांग का पूरा ग्यान का ऊरा, पेट का तूटा डिंभ का सूरा।
बदत गोरख न पाया जोग, करि पाखंड रिझाया लोग।''[13]

गोरखनाथ ने उस समय के समाज में व्याप्त बुराइयों का चित्रण भी किया। धर्म का स्वरूप बिगड़ रहा था। ढोंगी धर्म प्रचारकों के कारण समाज में विकृति आने लगी –

''चारि पहर आलिंगन निंद्रा, संसार जाइ बिसिया बाही।
ऊभी बाँह गोरखनाथ पुकारै, मूल न हारौ म्हारा भाई।''[14]

ऐसे समय में ऐसे सात्विक लोगों की आवष्यकता है जो समाज को सही दिशा दिखाये। गुरू गोरखनाथ ने यही समझते हुए गुरू की महत्ता पर बल दिया। गुरू के बिना ज्ञान तत्त्व नहीं मिलता –

''गुर कीजै गहिला निगुरा न रहिला।
गुर बिन ग्यांन न पायला रे भाइला।''[15]

गुरू के मिलने के बाद व्यक्ति को आत्मज्ञान होता है। व्यक्ति बाह्य आसक्तियों से मुक्त होता है। फिर उसके सामने कोई विषय हीं नहीं रह जाता। सब तरफ आत्मा का स्वरूप ही दिखाई देता है–

''कासौ झूझौं अवधू राई, विषय न दीसै कोई।
जासौं अब झूझौं रे आतम राम सोई।''[16]

गोरखनाथ सदाचार पालन और पूजा सम्बन्धी सात्विकता को प्रश्रय देते हैं। हिंसा, जीव हत्या और मूर्ति पूजा का वे विरोध करते हैं –

''जीवा सीवा नां संगै बासा।
न बधि खाइबा रे रूघ्र मासा।''[17]

गोरखनाथ के अनुसार ईश्वर आत्मा में निवास करता है। वह ईश्वर अन्दर से मनुष्य के कार्यों को देखता है। वे अवधूतों को ब्रह्म चिंतन करने और जाग्रत होने का संदेश देते हैं।

''जागौ हो जोगी अध्यातम लागौ,
भूलौ न जग म्हारा भाई रे।
अंदरि बैठो अपणौं साहिब
देखै सोधे सकल कमाई रे।।''[18]

साहित्य और समाज का सम्बन्ध अक्षुण्ण है। अनैतिकता, अपराध एवं आडम्बरों में लिप्त बाबाओं और ढोंगी लोगों से समाज को बचाने की आवश्यकता है। समाज के गिरते स्तर को ऊपर उठाने एवं संयम के साथ जीवन की सीख देने में गोरखनाथ का साहित्य आज भी प्रासंगिक है। ब्राह्मण धर्म के लिए उस समय चुनौती बने बौद्धधर्म से शास्त्रार्थ कर धर्म पुनर्स्थापना का जो कार्य शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट ने किया, वही कमोबेश गुरू गोरखनाथ ने भी किया। गोरखनाथ के उपदेश योगियों एवं गृहस्थ दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ''उनके साहित्य की, उपदेशों की महत्ता इसी से आंकी जा सकती है कि तत्कालीन सभी सम्प्रदायों ने योग के इस संयमपूर्ण मार्ग को अल्पांश में या अधिकांश में अवश्य स्वीकार किया। जैन, बौद्ध, वैष्णव, शैव, शाक्त यहाँ तक की परवर्ती सूफी भी इससे अछूते न रहे।''19 गोरखनाथ के काव्य में सदाचार, संयम, सत्कर्मों पर जोर है। इस काव्य में हिंसा, मूर्तिपूजा, कर्मकांड, बाह्यचारों, अहंकार, मद्य–मांसाहार आदि का विरोध किया गया है। शारीरिक–मानसिक शुद्धि, योग, धैर्य, वीर्य संयमन, इन्द्रिय निग्रह, प्राण साधना, नाड़ी साधना, रसायन सिद्धि, सत्य, संतोष जैसे तत्त्वों के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

स्पष्ट है गोरखनाथ एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व होने के साथ युग द्रष्टा थे। उनके काल का निर्धारण थोड़ा विवादित है। ऐसा भी माना जा सकता है कि योगी दीर्घजीवी होते हैं पर फिर भी उनका समय 8वीं से 13वीं शताब्दी तक खिंच जाता है, जो कि विचारणीय है। ऐतिहासिकता के निर्णय के साथ काल निर्णय की चुनौती बनी हुई है पर उनकी देन को अनदेखा नहीं किया जा सकता। गोरखनाथ युगद्रष्टा और लोकनायक थे। वे बड़े संगठनकर्त्ता थे। उन्होंने लोकभाषा को अपने उपदेशों का माध्यम बनाया। आदिकाल में गोरखनाथ ने अपनी कविता में भक्ति की जिस साधना पद्धति का बीजारोपण किया, वह भक्तिकाल में संत साहित्य के रूप में फलवती हुई।

संदर्भ संकेत –

1. डब्ल्यू ब्रिग्स – गोरखनाथ एंड दी कनफटा योगीज, रेलिजस लाइफ ऑफ इंडिया सीरिज 1938 ई., पृष्ठ 292–93
2. कल्याणी मलिक – नाथ सम्प्रदाय का इतिहास, दर्शन और साधना प्रणाली, पृष्ठ 32
3. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय – नाथ और संत साहित्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1965 ई., पृष्ठ 2–4
4. सत्यकेतु विद्यालंकार – भारतीय संस्कृति का विकास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2000 ई., पृष्ठ 416
5. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1989 ई., पृष्ठ 83
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी – नाथ सम्प्रदाय, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, पृष्ठ 97
7. वही, पृष्ठ 41
8. सत्यकेतु विद्यालंकार – भारतीय संस्कृति का विकास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2000 ई., पृष्ठ 416
9. पीताम्बर दत बड़थ्थवाल – गोरख बाणी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1971 ई., पृष्ठ 152
10. डॉ. रामनिवास गुप्त – श्री गोरख गीत, लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 07
11. पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल – गोरख बाणी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1971 ई., पृष्ठ 152
12. राम निवास गुप्त – श्री गोरखगीत, लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 145
13. वही, पृष्ठ 148
14. वही, पृष्ठ 72
15. वही, पृष्ठ 63
16. वही, पृष्ठ 61
17. वही, पृष्ठ 35
18. वही, पृष्ठ 78
19. नागेन्द्र नाथ उपाध्याय – गोरखनाथ, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2014 ई., पृष्ठ 65

डॉ. गोपीराम शर्मा
सहायक प्रोफेसर , हिन्दी विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

श्री आत्मा राम
सहायक प्रोफेसर , इतिहास विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com